शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'रतिनाथ की चाची' उपन्यास में ग्रामीण जीवन

सबीना खान (शोधार्थी)
हिंदी साहित्य
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

नागार्जुन के उपन्यास साहित्य पर दृष्टिपात करने पर अनेक विशिष्टताएँ सामने आती हैं। वे आंचलिक उपन्यास की दृष्टि से अप्रतिम हैं। राजनीति से प्रभावित लोकजीवन की झांकी को वहीं की बोली-बानी के माध्यम से कलात्मक सज्जा प्रदान करने में उन्हें पर्याप्त सफलता मिली है। उनके उपन्यासों में मिथिला के ग्रामों, वहाँ के निवासियों की मनःस्थिति, प्राचीन रूढियों, जमींदार, किसान संघर्ष और नयी राजनीतिक चेतना के साथ प्राकृतिक चित्रण का अंकन कुशलता से हुआ है। यही कारण है कि उनके उपन्यासों में सामाजिक,राजनीतिक स्थिति तथा ग्रामीण जीवन के चित्र मिलते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में 'रतिनाथ की चाची' उपन्यास में ग्रामीण जीवन की पड़ताल की गयी है

साहित्य साधना

नागार्जुन ने निम्नवर्गीय जनता को आर्थिक-सामाजिक संघर्षों में जूझते देखा है और सार्वजनिक जीवन की विकृतियों का यथार्थपरक अंकन साम्यवादी दर्शन की आधारशिला पर किया है। इस प्रकार हिन्दी उपन्यास क्षेत्र में नागार्जुन 1948 में उतरे। उनके आठ उपन्यास चर्चित हुए हैं। 'रतिनाथ की चाची ' (1948), 'बलचनामा' (1954), 'नई पौध ' (1953), 'बाबा बटेसरनाथ ' (1954), 'वरूण के बेटे' (1957), 'दुःखमोचन' (1957), 'उग्रतारा' (1963) और 'जमनिया का बाबा' (1968)। नागार्जुन ने मिथिला का चरित्र-विकास उपस्थिति किया है। मिथिला अंचल के परिप्रेक्ष्य में फैले असंख्य नर-नारी , बाल, वृद्ध, पशु-पक्षी, तालाब, पोखर, पेड-पौधे आदि को लेखक ने सजीव कर दिया है। आंचलिक उपन्यास कहते ही उसे हैं जिसमें किसी स्थान विशेष का संपूर्ण जनजीवन अपनी संपूर्ण विशेषताओं के साथ प्रतिबिम्बित हो उठता हो। नागार्जुन के सभी चरित्र मिथिला के व्यक्तित्व का विकास करते हैं। मिथिला के ग्रामीण जीवन से उनका इतना घनिष्ठ परिचय है कि हम उनके प्रत्येक उपन्यास में एक ऐसा मानवीय भाव पाते हैं जो बहुत थोड़े कथाकारों को सुलभ हो पाता है।

नागार्जुन ने उपर्युक्त भाव-भूमि पर उपस्थित होकर जिस परम्परा को जन्म दिया है , उनमें 'रतिनाथ की चाची ' उनका पहला उपन्यास है। बाबा बटेसरनाथ, बलचनामा, दुःखमोचन आदि इसी परम्परा को आगे बढ़ाने वाले उपन्यास हैं। कला और शिल्प की दृष्टि से उनके उपन्यासों में आदर्श आंचलिक उपन्यास के सारे गुण सहज ही मिल जाते हैं। उनमें वातावरण की चित्रोपमता , सजीव घटनाएँ , पात्रों के चरित्र का स्वाभाविक विकास क्रम, घटनाओं एवं पात्रों के परस्पर संबंधों तथा संघर्षों द्वारा कथा का स्वाभाविक विकास और परिणति आदि विशेषताएँ प्रचुर मात्रा में

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मिल जाती हैं। इसके साथ ही उन्होंने हिन्दी उपन्यास को जो नई चीज प्रदान की है वह कण के रूप में वर्तमान जीवन को देखने और समझने वाली नवीन चेतना का युगानुकूल एवं कलात्मक यथार्थवादी दृष्टिकोण उन्होंने मिथिलांचल के स्त्री-पुरूषों की मनःस्थिति , उनकी पुरानी परम्पराओं, जमींदार, किसान संघर्ष, नई राजनीति चेतना के साथ-साथ उस श्यामला भूमि के प्राकृतिक दृश्यों का भी चित्रण किया है। आंचलिक बोलियों के प्रयोग से इनके वर्णित स्त्री-पुरूष सजीव हो उठे हैं। इनके उपन्यासों में नवीन सामाजिक जनचेतना को जीवन्त शक्ति प्रदान करने का सफल प्रयास किया गया है , जो आंचलिक समस्याओं को उभारकर परिस्थितियों का यथार्थ आकलन किया गया है। निर्विवाद रूप से आंचलिक उपन्यास लेखकों में नागार्जुन अग्रगण्य हैं।

रतिनाथ की चाची में ग्रामीण जीवन

'रतिनाथ की चाची' में मिथिला अंचल के दरभंगा जिले के गांव तरकुलवा और शुभंकरपुर को कथा का आधार बनाया गया है। तरकुलवा से "पाँच कोस उत्तर नेपाल है। पुरूव लोकहा थाना है , पश्चिम में कमला मैया बहती है। जमीन बहुत उपजाऊ है। दो-दो मन कट्ठा धान उपजता है। "1 इसके साथ ही जमीन के उपजाऊपन का परिचय भी मिलता है। तरकुलवा में कई छोटे-बड़े पोखरा और तालाब है। ये सरोवर वहाँ के निवासियों की जीविका के साधन और मनोरंजन की सामग्री हैं। "दरभंगा जिले की उत्तरी सीमा यहाँ से चार कोस पर है। आगे नेपाल है। यह हिमालय नेपाल ही में तो पड़ता है। शुभंकरपुर में गौरी का सुसराल है।"2

इस प्रकार उपन्यास में मिथिला के गाँव की स्थिति का जीता-जागता चित्र उपस्थित कर दिया गया है। चारों दिशाओं में स्थित सीमाएँ, गाँव की प्रकृति एवं सरोवरों की बहुलता , उसकी यथाचित वस्तु स्थिति स्पष्ट कर रही है। यह समस्त चित्रण अंचल के वातावरण के फलदार पेड़ पौधें , फुलवारी और तालाब में प्राप्य विभिन्न प्रकार की मछलियों का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है और यह चित्रण मिथिला के प्राकृतिक वातावरण , पेड-पौधों और जमीन आदि का प्रतिबिम्ब बनाता है। अंचल का 'सामाजिक वातावरण' मध्यम वर्ग से संबंधित है। शुभंकरपुर में "ढाई सौ परिवारों की आबादी और खानेवाले मुँह ग्यारह सौ ' है जो स्पष्ट करता है कि प्रायः लोग गरीब ही हैं जो मेहनत मजदूरी करके तथा तालाबों से मछलियाँ पकड़कर जीवन-यापन करते हैं। "3 स्त्रियाँ दिन-रात चर्खा चलाकर अपने लायक पैसा कमा लेती है। वातावरण भक्ति-भावना और पवित्रता से ओतप्रोत है। व्रत, ध्यान, पूजा में रूचि स्वाभाविक ही है। संस्कृत का प्रसार अच्छा है।

इस प्रकार उपन्यास में प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण अंचल की धरती और ग्रामीण परिवेश तथा लोक-मानव का चित्र प्रस्तुत करता है। उपन्यासकार अंचल के कण-कण और जन-जन से पूर्ण परिचित है। जहाँ ढाई सौ परिवारों की आबादी और खाने-वाले ग्यारह सौ हो , भला वहाँ की आर्थिक स्थिति कैसे खुशहाल रह सकती है कि "रतिनाथ को गरीबी के मारे उसके बाप ने उसे हिन्दी-अंग्रेजी स्कूल में नहीं रख सका। " 4 लेकिन यह जरूरी नही है कि जहाँ की आर्थिक स्थिति अच्छी न हो , वहाँ की संस्कृति की दशा भी अच्छी न हो। ऐसे स्थान पर संस्कृति ही महान होती है। वही व्यक्ति को मानवता के उच्च शिखर पर प्रतिष्ठित करती है। इस दृष्टि से लोक-मानव धर्म पर निर्भर रहता है। समय-समय पर पूजा , व्रत, त्यौहार, उत्सव आदि बड़े

मनोयोग से मनाता है। पहला आम का फल पकने पर उसे सबसे पहले भगवान को अर्पित करता है। बाद में स्वयं खाता है। "एक दिन सुबह-सुबह रतिनाथ ने एक पका आम पाया और खुशी के मारे चिल्ला उठा-पिताजी मैंने गोपी पाई है। घर के आंदर से ही जयनाथ ने आवाजी दी- अरे सूंघ मत लेना, भगवान को भोग लगाएंगे।"5 सल्हेस दुसाधों का देवता है उसी की पूजा की जाती है। तारा बाबा अश्विन के महीने में दशभुजी दुर्गा की पूजा करते हैं। जहाँ एक ओर धर्म और संस्कृति है , वहीं दूसरी ओर कुरीतियाँ और कुप्रथाएँ भी प्रचलित हैं। बाल विवाह, बिकौआ प्रथा, असंगत विवाह आदि इस प्रकार की कुप्रथाएँ हैं। गौरी ऐसे ही अनमेल विवाह और बलात्कार की ज्वलंत उदाहरण है। अनमेल विवाह की समस्या ही मूलतः वैधव्य का कारण है। यही इस उपन्यास का केन्द्र है। उपन्यास की सामाजिक परिस्थितियाँ जटिल और संघर्षयुक्त है।

'रतिनाथ की चाची ' में मिथिला अंचल की प्रतिनिधित्व तरकुलवा और शुभंकरपुर की पृष्ठभूमि में किया गया है कि "तरकुलवा में सभी जाति के लोग बसते थे। दुसाध, मुसहर, डोम थे तो धुनिया , जुलाहा भी थे। लेकिन बाभन , राजपूत, बनिया, ग्वाला वगैरह एक ओर थे , मुसलमान दूसरी ओर। लोगों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। स्त्रियाँ तकली अथवा चरखा चलाकर अपने फुर्सत का वक्त आसानी से काट लेती है। आठ-दस वर्ष की उम्र से लेकर जीवन पर्यन्त तकली का और उनका साथ रहता है। गौरी तो तीसरे साल जब तरकुलवा से आयी, तभी से चरखा चला रही है। पच्चीस-तीस रूपये हर महीने इससे निकल आते हैं।"6 वह भारतीय सूत-प्रतियोगिता में सर्व प्रथम पद प्राप्त कर चुकी हैं, फिर भी चालाक और दुष्ट चरखा संघ वालों से उसे पूरी मजदूरी नहीं मिलती। फिर भी चरखा चलाने से चाची को लाभ पहुँचा है। आर्थिक समस्या हल हो गयी। मन नियंत्रित हो गया। दुर्भावानाओं से छुटकारा मिला। मिथिला की कुलीन ब्राह्मणियों के जीवन में इस का बहुत बड़ा स्थान रहा है।

गाँव में जो आठ-दस पोखर और तालाब है , उनसे मछलियाँ पकड़ी जाती हैं और आजीविका का निर्वाह किया जाता है। लोग मछलियाँ खाते हैं और बेचकर अन्य घर खर्च चलाते हैं। जिन लोगों के पास खेती का अभाव थ , वे मेहनत मजदूरी करते हैं। गाँव के नजदीक ही हाट लगता है। सोमवार और गुरूवार को। धान , चावल, दाल, तेलहन, मकई, साग-भाजी, मछली, पान, मोटिया, गमछा और चादरें हाट के रोज शुभंकरपुर के लोग यह चीजें खरीद लाते थे।

नागार्जुन को मिथिला की इंच-इंच धरती की पहचान है। आम की फसल मिथिला में विशाल स्तर पर की जाती है। गौरी के पिता "चुम्मन झा के पच्चीस बीघा जमीन थी , उपजाऊ। चार सौ मन धान-साल-साल होता था। एक बड़ा सा कलम बाग था जिसमें कलमी आम के पचासों पेड़ थे। इस तरह आम भी इनके लिए एक अच्छी फसल थी।"7 रतिनाथ के पिता को पूजा , पाठ, गपशप, सैर-सपाटा, बाबा वैद्यनाथ, बाबा विश्वनाथ, दुर्गा, तारा, काली- इनकी चर्चाओं के अतिरिक्त यदि कोई और वस्तु जयनाथ को प्रिय थी , वह थी विजया बनाम भंग भवानी। ' गौरी के पति वैद्यनाथ झा को शतरंज का इतना शौक था कि एक बैठक में दस-दस घण्टे खेलते रहते। ' कुछ लोग पान और सुरती भी खाते हैं।

मिथिला की स्त्रियाँ शांतिपुरी धोती पहनती हैं, जैसे दयमन्ती। वह गले में बारीक रूद्राक्षों की माला भी पहनती है। यहाँ के नर-नारी भक्ति

भावना से ओतप्रोत है कि "दम्मो फूफी नित्य सुबह-शाम शिवजी के दर्शन करने मन्दिर जाती है। रतिनाथ अनिच्छा से पूजा-पाठ करता है। दुसाध लोग सल्हेज देवता की पूजा करते हैं। यह इन लोगों का आंचलि क देवता है। गौरी की माँ मंगलवार को उपावास रखती है। तारा बाबा दशमुखी दुर्गा माता की पूजा-अर्चना करते हैं। जयनाथ तो दुर्गा पूजा के दसों दिन विन्ध्याचल पर बिता देते हैं। मिथिला में शिक्षा का प्रसार अच्छा है। दैनिक जीवन में जितनी उपासना और कर्मकाण्ड की आवश्यकता होती है , उतना तो साधारण से साधारण व्यक्ति भी पढ़ा होता है। जयनाथ की भी अपने दैनिक प्रयोग के लिए आवश्यक जानकारी के लिए पढ़े हैं। रतिनाथ को यह गाँव के स्कूल में हिन्दी और संस्कृत की शिक्षा दिलवाते हैं।"8

'रतिनाथ की चाची ' में मिथिला का जन-जीवन विविधताओं के साथ रूपायित हुआ है। 'रतिनाथ की चाची ' में निम्न-मध्यवर्ग की समस्याएँ ग्रामीण परिवेश में उभारी गयी है। अनमेल विवाह-बालविवाह, बिकौवा प्रथा , अवैध गर्भधारण करना तथा वैधव्य इसकी प्रमुख समस्याएँ हैं मिथिला के मध्यम वर्ग के घराने में प्रायः बेमेल विवाह की समस्या नारी जीवन को नारकीय बनाती है। गौरी और वैद्यनाथ दम्पत्ति इसका ज्वलंत उदाहरण हैं। गौरी को विवाह उसकी उम्र से बडे पति वैद्यनाथ के साथ हुआ। रतिनाथ की चाची पर वैधव्य का वज्र गिरता है। दूसरी ओर अति कामी रंडुआ पुरूष वर्ग उन्हें अपनी यौन-पिपासा का शिकार बनाता है। अनैतिक गर्भ देकर उसे सड़ने-कलपने के लिए छोड़कर दूर हट जाता है। अब नारी के लिए आत्महत्या अथवा समाज से बहिष्कृति दो मार्ग रह जाते है। गौरी जैसी स्त्रियाँ चुपके से गर्भपात करा देती है। वही समस्या मूलतः इस उपन्यास की हैं जिसका कोई संतोषजनक समाधान नहीं मिल सका है , अपितु गर्भपात कराके मुक्ति पा ली है।

निष्कर्ष

इस प्रकार उपन्यास में मिथिला अचंल की ग्रामीण नारी जीवन की समस्याओं का चित्रण बहुविधरूप से किया गया है। अनैतिक गर्भ के समाधान का जब कोई रास्ता नहीं दिखता तो गुप्तरूप से गर्भपात कराना पड़ता है इसके साथ ही नयी और पुरानी पीढ़ी के बीच संघर्ष भी उभरा है। भवदेव या अन्तर्जातीय विवाह और तत्संबंधी समस्या अपने में विशिष्ट है।

ग्रामीण परिवेश में मिथिला अंचल की नारी की विविध-संबंधी समस्याओं से कुचले हुए जीवन का साक्षात्कार ही उपन्यास का प्रधान उद्देश्य है। उपन्यास में ग्रामीण नारी को जिस रूप में विषय बनाकर उभारा है, वह कथाकार के नारी उद्धार के उद्देश्य में समाहित हो गया है। नारी जीवन की विविध समस्याएँ ही उसका विषय है तथा नारी उद्धार ही चिंता की उसके उद्दे श्य की मूल संवेदनशीलता है। इस प्रकार, 'रतिनाथ की चाची' मिथिला अंचल का सशक्त ग्रामीण उपन्यास है , जिसमें समसामयिक परिस्थितियों की नवचेतना के साथ ही लोकमानव का ग्रामीण जीवन विविधताओं के साथ उजागर हुआ है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. फणीश सिंह: हिन्दी के आंचलिक उपन्यास एवं उपन्यासकार, पृ. 156
2. नागार्जुन: रतिनाथ की चाची पृ. 35
3. वही, पृ. 42
4. वही, पृ. 58
5. वही, पृ. 72
6. शोभाकान्त मिश्र: नागार्जुन चुनी हुई रचनाएं पृ. 75
7. नागार्जुन: रतिनाथ की चाची पृ. 105
8. वही, पृ. 112